चन्दामामा

माँ – बच्चों का मासिक पत्र





एक बार जैनों और ब्राह्मणों में इस बात पर झगड़ा उठ खड़ा हुआ कि दोनों में कौन बड़ा है। दोनों अपने आप को दूसरे से बड़ा मानते थे। इस तरह सारा राज उन दो दलों में बँट गया था। यहाँ तक कि राज-परिवार में भी इसके कारण मतभेद उठ खड़ा हो गया था। राजा स्वयं जैनों को बड़ा मानता था। लेकिन रानी ब्राह्मणों पर ज्यादा श्रद्धा रखती थी। राजा जब जैनों की तरफदारी करता तो रानी को क्रोध आ जाता। रानी जब ब्राह्मण का समर्थन करती, तो राजा की भौहें चढ़ जाती। इस तरह जब कुछ दिन बीत गए तो राजा रानी दोनों ने सोचा कि-'ऐसे काम नहीं चलेगा। जैन और ब्राह्मणों में कौन बड़ा है यह हमेशा के लिए तय हो जाना चाहिए।' इसके लिए उन्होंने एक परीक्षा सोची। आधी रात को उन्होंने खुद जाकर महल के फाटक पर एक गड्ढा खोदा और उसमें एक मिट्टी का घड़ा जिसमें एक सोने का साँप बन्द था, गाढ़ दिया। उन्होंने इस बात को इतना गुप्त रखा था कि वह कोई नहीं जान सकता था।

दूसरे दिन राजा ने दरबार में जैनों और ब्राह्मण दोनों दलों के प्रमुख व्यक्तियों को बुलाया। जब सब लोग आ गए तो राजा ने उठकर कहा - "हमने अपने राज में एक जगह एक चीज छिपा रखी है। वह चीज क्या है, कहाँ छिपी है इसका तुम दोनों दलों वालों को पता लगाना होगा। जिस दल वाले इसका पता लगा लेंगे, उनको हम अनेक पुरस्कार देंगे। साथ ही उनके धर्म को हम अपना राज धर्म बना लेंगे। जिस दल वाले इसका पता नहीं लगा सकेंगे, उनका हम समूल नाश कर देंगे। इसके लिए हम दोनों दलों को एक महीने का समय देते हैं।" यह कहकर राजा दरबार से चला गया।

रामगोपाल



इस विषम परीक्षा की बात सुनते ही दोनों दल वाले सोच में पड़ गए। लेकिन करते क्या ? राजा की अज्ञा थी। सर झुकाए घर चले गए।

जैन लोग गणित शास्त्र में बड़े पण्डित थे। उन्होंने इसलिए उन्होंने दूसरे ही दिन किले के चारों ओर तीन चार प्रदक्षिणा की और उँगलियों पर गिन कर हिसाब लगाया। तुरन्त उन्हें सारी बात सच मालूम हो गई। अपनी विजय से वह लोग फूले न समाए। उन्हें अपने ज्ञान का बड़ा घमण्ड हो गया। इसलिए उन्होंने तुरन्त जाकर राजा के प्रश्न का उत्तर उसे नहीं कह दिया। उन्होंने सोचा कि तीसरे दिन भरे दरबार में ब्राह्मणों को खूब नीचा दिखाना चाहिए।

ब्राह्मणों को अपने तप के सिवा और किसी शक्ति का भरोसा न था। इसलिए वह झुण्ड के झुण्ड जाकर समुद्र में नहाकर वही किनारे पर तप करने लगे। जलती धूप में बालू पर बैठकर तब करना क्या कोई आसान काम था ! उन्हें दिन-रात वहाँ पड़े पड़े तप करने में बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। लेकिन उन्होंने इसकी कोई परवाह न की। वे वहीँ जमकर बैठ गए और आँखें मूँद कर तप करते रहे। इस तरह उन्हें तप करते हुए एक नहीं, दो नहीं उनतीस दिन बीत गए। उन्हें न भूख प्यास सताती थी और ना नींद ही।

उन ब्राह्मणों की लगन देखकर सूरज भगवान को बहुत अचरज हुआ। उन्होंने सोचा -" इनके लिए अब सिर्फ एक दिन का समय रह गया है। देखें, यह लोग आखिरी दम तक इसी तरह तप करते रहते हैं या निराश हो सब कुछ छोड़-छाड़ कर चले जाते हैं।" यह सोचकर भगवान सूर्य उनकी तरफ थोड़ा ध्यान देने लगे। तीसरा दिन भी बीतने को आया। लेकिन उन



ब्राह्मणों में एक भी विचलित नहीं हुआ। धीरे-धीरे अँधेरा पड़ गया और रात हो गई। यहाँ तक कि रात का तीसरा पहर भी बीत गया। लेकिन वे ब्राह्मण उसी तरह तप में लग रहे। अब तो पौं को सिर्फ एक प्रहर बचा रहा। लेकिन उन ब्राह्मणों को समय का ज्ञान ही नहीं रह गया था। उन्हें यह भी याद न रहा कि उन्हें तुरन्त उठकर राजा के पास जाना है। आने वाली बिपदा की सुध भी उन्हें नहीं थी। यह देखकर अब सूरज भगवान से न रहा गया। उन्होंने तुरन्त एक बूढ़े ब्राह्मण का बेष धारण कर लिया और समुद्र के किनारे तप करने वालों के बीच खड़े होकर कहा - "भाइयों ! अब सब लोग ध्यान से जागो। हमें तुरन्त राजा के पास जाना है। मुझे उसे गुप्त वस्तु का पता भी लग गया है। अब समय ज्यादा नहीं बच गया। चलो तुरन्त चले।" यह कहकर उस बूढ़े ब्राह्मण ने सबको तप से जगाया और उन्हें साथ लेकर राजा के पास गया।

जैन लोग दरबार में कब के हाजिर हो गए थे। राजा और रानी भी ऊँचे आसनों पर बैठे हुए थे। सिर्फ ब्राह्मणों के आने की देर थी। अब तक ब्राह्मणों को आया न देखकर रानी चिन्ता में डूबी हुई थी। उसे सिर्फ अपनी बाज़ी हारने का ही सोच न था। उसे ज्यादा सोच यह थी कि हर जाने पर ब्राह्मणों का सर्वनाश हो जाएगा।

राजा मन में फूला न समा रहा था। वह मन ही मन सोच रहा था -"यह ब्राह्मण लोग क्यों आएंगे अब ! वे तो जान बचाकर कभी के भाग निकले होंगे। मैं तो पहले से ही जानता था कि उनको कुछ नहीं आता है।" इतने में ब्राह्मणों का दल दरबार में आ पहुँचा। उनको देखते ही राजा के मुँह पर काटो तो खून नहीं। पर रानी का मुँह खिल उठा। उसकी आँखों में आशा जगी।

ब्राह्मणों के आगे एक तेजस्वी बूढ़े को देखकर उसके मन को शान्ति पहुँची।

थोड़ी देर तक सारे दरबार में सन्नाटा छा गया। तब राजा ने जैनों की तरफ देखकर पूछा -"क्या तुम हमारे प्रश्न का उत्तर देने को तैयार हो ?" तब एक बूढ़े जैन ने उठकर कहा - "महाराज ! आपने एक मिट्टी के घड़े में एक सोने का साँप बन्द कर उसे घड़े को किले के फाटक पर गाड़ दिया है। यह उत्तर सुनते ही राजा का मन बल्लियों उछल पड़ा। उसने कनखियों से रानी की तरफ देखा मानो कह रहा हो -"देखा तुमने ! मैं ही जीत गया।"

रानी तब आतुर होकर ब्राह्मणों की तरफ देखने लगी। उस आगे वाले तेजस्वी बूढ़े ने उठकर कहा - "महाराज ! इनका कहना असत्य है। आपने मिट्टी का घड़ा नहीं ताम्बे की कलसी गाड़ दी है। उनमें सोने का साँप नहीं एक ज़िन्दा काला नाग बन्द है। कलसी भी फाटक पर नहीं बल्कि महल के पिछवाड़े गड़ी है। आपको मेरी बात पर विश्वास ना हो तो खुद उसे जगह खुदवा कर देख सकते हैं।" यह सुनते ही जैनों का दल स्तब्ध रह गया।



तब राजा सबको साथ लेकर किले के फाटक पर गया और वहाँ खुदवा कर देखा। लेकिन वहाँ मिट्टी का घड़ा कहाँ था ? राजा को अपनी आँखों पर आप ही विश्वास न हुआ। उसने उसी जगह तो घड़ा गाढ़ दिया था। जैन लोग आशङ्का से काँपने लगे। किसी तरह राजा ने अपने आप को सम्भाला और महल के पिछवाड़े जाकर ब्राह्मणों की कही हुई जगह पर खुदवाया। वहाँ मिट्टी के अन्दर एक ताम्बे की कलसी मिली। जब राजा ने इसका ढक्कन खुलवाया उसमें से काला नाग पुकारते हुए बाहर आया। ब्राह्मणों की जीत हुई और जैन लोग हारे।

आप राजा को अपनी इच्छा के विरुद्ध ब्राह्मणों को बहुत से पुरस्कार आदि देकर उनके धर्म को राज-धर्म बना देना पड़ा। अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उसे जैनों का नाश भी कर देना था। लेकिन रानी ने उन पर तरस खाकर कहा -"बेचारे जैन तो हार ही गए हैं। अब नाहक़ उनकी जान लेने से क्या फायदा ! इसलिए उन्हें छोड़ दीजिए।" लेकिन राजा ने उसकी बात न मानी। उसने कहा - "जब राजा ही अपनी प्रतिज्ञा का पालन न करेगा तो फिर प्रजा का क्या हाल होगा ? नहीं नहीं। चाहे जो भी हो, मुझे तो अपनी भयङ्कर प्रतिज्ञा निभानी ही पड़ेगी।

अब राज भर के जैनों को एक जगह कतार में खड़ा कर दिया गया। तब उनमें सब से ज्ञानी बूढ़े अमर सिंह ने सोचा -"हाय ! हमारे धर्म पर यह कैसा पहाड़ टूट पड़ा है। क्या दिव्य ज्ञान से भरे हुए हमारे शास्त्र यूँ ही नष्ट हो जाएँगे ? नहीं। कभी नहीं।" यों सोचते सोचते सहसा उसे एक उपाय सूझ गया । उसने राजा के पास जाकर एक दिन का समय माँगा। राजा ने स्वीकार कर लिया और उन सबको तब तक एक जेल में बन्द रखने का हुक्म दे दिया। जेल में जाते ही अमर सिंह ने भोज पत्रों पर एक बड़ा ग्रन्थ लिखना शुरू कर दिया। इस तरह वह दिन भर, रात भर लिखता ही रहा। एक दिन का समय बीत गया और राजा ने जाकर जेल के दरवाजे खुलवाए। तब तक अमर सिंह का ग्रन्थ भी तैयार हो गया था ,उसने उसे ले जाकर राजा के हाथ में रख दिया। राजा ने जब उसे ग्रन्थ को उलट पलट कर देखा, तो उसे इतनी खुशी हुई कि उसने तुरन्त सब जैनों को रिहा करने का सुकून दिया। अमर सिंह के नाम को अमर बनाने के लिए राजा ने उसे ग्रन्थ का नाम अमरकोश रख दिया।

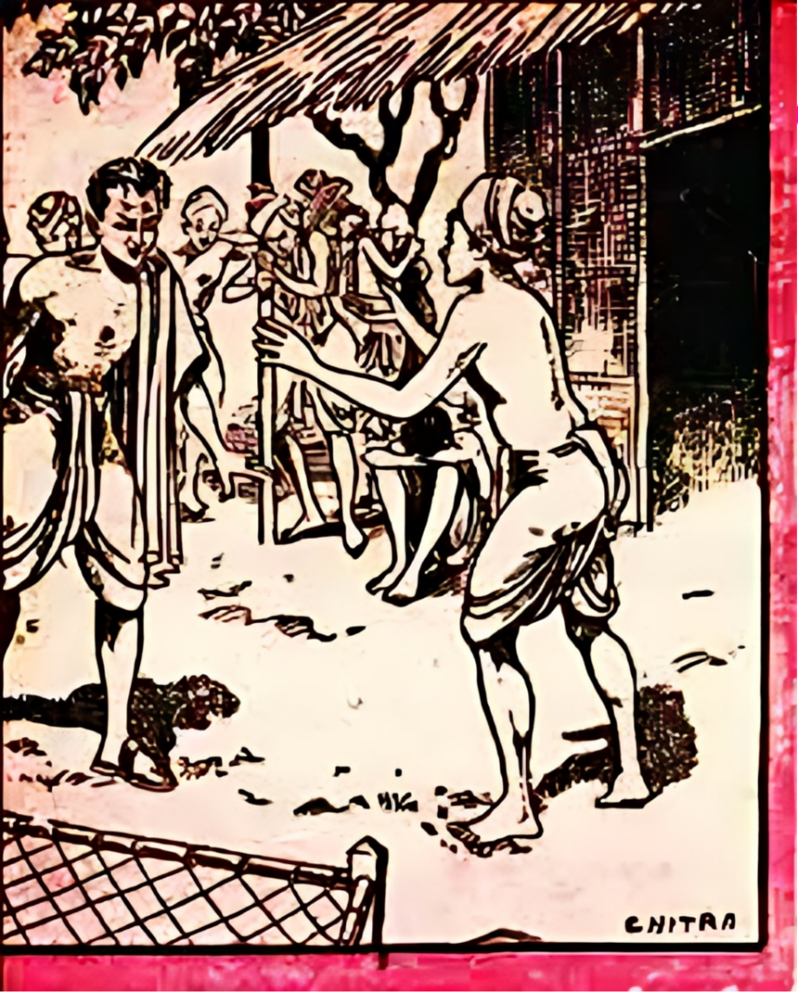




किसी गाँव में वक्र और शक्र नाम के दो भाई रहते थे। उनके गांव से दो सौ मिल की दूरी पर एक पहाड़ था। एक दिन दोनों भाइयों से किसी ने कहा कि -"उस पहाड़ पर एक सोने की खान है। कुछ रुपया खर्च कर सात आठ महीने तक मेहनत करने से कोई भी वह सोना पा सकता है। हाँ, इसके लिए जरा लगन की जरूरत है।"

यह सुनकर दोनों में से बड़े ने जिसका नाम वक्र था, छोटे से कहा -"वाह ! यह तो अच्छा मौका है। हम कुछ मजदूरों को साथ लेकर उस खान का पता लगाने क्यों न जाएँ ! अगर हमारे भाग से सोना मिल गया, तो फिर कहना ही क्या ! मालामाल हो जाएँगे। फिर हमें ज़िन्दगी भर किसी चीज की कमी न रहेगी। बस बैठे-बैठे मौज उड़ाया करेंगे। बड़ा भाई बड़ा आलसी जीव था। काम-धन्धे से घबराता था। हमेशा अमीर बनने की आसान तरकीबें सोचा करता था। इसीलिए सोने की खान का नाम सुनते ही उसके मुँह से लार टपकने लगी। लेकिन छोटे भाई का स्वभाव उससे एकदम उल्टा था। इसलिए सोने की खान के बारे में अपने भाई की उतावली देखकर भी उसके मन में कोई उत्साह नहीं पैदा हुआ। तो भी अपने बड़े भाई की बात न टाल सकते के कारण उसने सिर हिला कर हामी भर दी। अब दोनों भाई कुछ रुपया हाथ में ले मजदूरों के साथ गाँव छोड़कर चले। वह कई मञ्जिलें तय करके एक महीने में उस पहाड़ के नजदीक जा पहुँचे। पहाड़ बहुत ऊँचा था। वक्र तुरन्त मजदूरों के साथ पहाड़ पर चढ़ने लगा। लेकिन छोटे भाई ने वहीं रुक कर कहा -"भैया ! मैं तुम्हारे साथ पहाड़ पर चढ़कर क्या करूँगा ? अच्छा हो यदि मैं यही नीचे रह जाऊँ। मैं यहाँ रह कर रखवाली

रामदेव



का काम करूँगा जिससे कोई पहाड़ पर आकर तुम्हारे काम में खलल न डाल सके। उसकी यह बात वक्र को भी अच्छी लगी। वह उसे वहीं छोड़ गया।

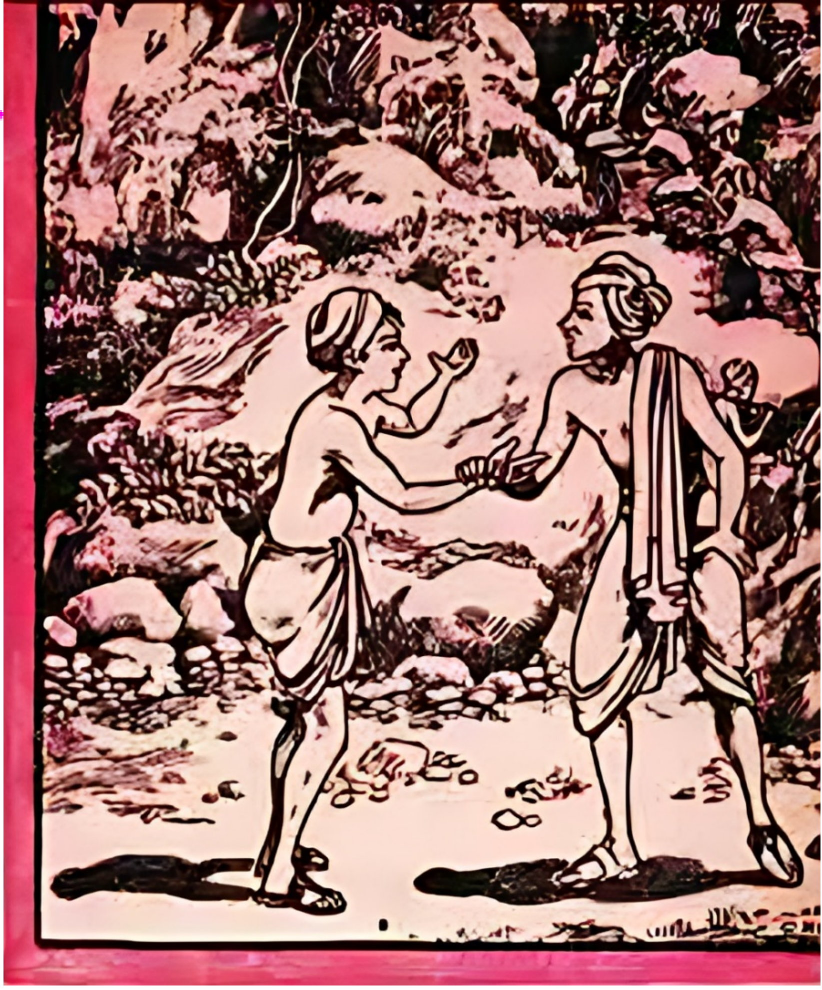
उस पहाड़ की तलहटी में एक गाँव था। शक्र ने थोड़े ही समय में गाँव वालों से हेल-मेल कर लिया। उनकी सहायता से उसने पहाड़ के नीचे ही एक कुटिया भी बना ली। गाँव वाले उससे बहुत प्रसन्न थे। इसलिए उसे किसी चीज की कमी न होने देते थे।

कुछ दिन बाद शक्र ने उसे गाँव के जमींदार के पास जाकर कहा - "महाशय ! मैं यहाँ बिल्कुल बेकार रहा करता हूँ। इसलिए अगर आप अपनी जमीन में सात आठ बीघे मुझे खेती करने के लिए दें तो बहुत अच्छा हो। फसल तैयार होते ही मैं आपका क़र्ज़ अदा कर दूँगा। यह सुनकर जमींदार ने खुशी के साथ उसकी इच्छा पूरी कर दी। इतना ही नहीं बीज और खेती के सामान खरीदने के लिए उसने कुछ रुपए भी दिए।

अब शक्र ने दिन-रात अपने खेतों पर मेहनत करना शुरू किया। सुयोग से उस साल पानी भी समय पर बरसा और फसल अच्छी हुई। शक्र ने जमीदार साहब का कर्ज चुका दिया और अब उनके हिस्से का अनाज उन्हें दे दिया। तो भी उसके पास पच्चीस-तीस बोरेअनाज बचे रहे। शक्र को इस तरह खेती में लगता देखकर गाँव वाले भी बहुत खुश हुए। शक्र ने अपना अनाज कुटिया में रखवा लिया और अब मजे से दिन काटने लगा। तब तक उसके भाई को पहाड़ पर गए सात महीने बीत गए थे।

कुछ ही दिनों में पहाड़ पर वक्र का काम खत्म हो गया। उसने सोने की खान का पता लगा कर बहुत सा सोना खोद लिया

था। लेकिन वह जो रसद बगैरह साथ ले गए थे, वह कब की चूक गई थी। करीब एक महीने से भी आधे पेट खाकर दिन बिता रहे थे। वक्र और उसके मजदूर सभी बहुत दुबले और कमजोर हो गए थे। आखिर उन्हें लाचार होकर नीचे उतरना पड़ा। राह में उनकी बड़ी बुरी हालत थी। वह सब भूख प्यास से इतनी कमजोर हो गए थे कि कदम उठाते ना थे। तिस पर उन्हें सोना भी ढोकर ले जाना था। आखिर जब वक्र और उसके मजदूर पहाड़ से नीचे उतरे, तो वह भूख के मारे अधमरे से हो गए थे। खाने की चीज खरीदने के लिए उनके पास पैसे भी न बच रहे थे। उनके पास सोना तो था। लेकिन सोने से भी कहीं पेट की आग बुझती है! भूख से मरता हुआ आदमी सोना लेकर क्या करेगा? तब वक्र ने अपने भाई के पास जाकर सारा हाल कह सुनाया। उसके भाई ने कहा -"भैया! तुम लोगों को इस गाँव में खाना तो आसानी से मिल जाएगा। लेकिन एक-एक आदमी के भोजन का दाम एक-एक सोने की डली होगी। यह सुनकर वक्र को बड़ा क्रोध आया।



उसने सोचा कि उसका भाई गाँव वालों के साथ मिलकर षड्यंत्र रचकर उसका सारा सोना हड़प लेना चाहता है। उसने बोरा खोलकर सारा सोना जमीन पर बिखेर दिया और कहा -"अच्छा भाई ! हमारे पास जो कुछ है सब यही है। तुम इस गाँव वालों के साथ मिल कर बाँट लो और तुरन्त हमारे भोजन का प्रबन्ध करो। इसके सिवा हम कर ही क्या सकते हैं ! किसी तरह जान बचा लेंगे तो फिर आगे का हाल भगवान ही जाने।" इस तरह क्रोध में आकर उसने जो मन में आया कह दिया।

उसके छोटे भाई ने तुरन्त अपना सारा अनाज निकालकर सबके लिए रसोई बनाने का हुक्म दे दिया। जब तक वक्र और उसके साथी नहा धोकर आए तब तक खाना पक गया। सब ने बैठकर खाना खाया। ऐसा खाना उन्हें महीनों से नसीब न हुआ था। भोजन हो जाने के बाद शक्र ने जब अपना सारा किस्सा कह सुनाया तो उसके बड़े भाई को बहुत अचरज हुआ। उसके बाद शक्र ने सारा सोना वापस दे दिया और कहा -"भैया !तुमने नाहक मुझ पर शक किया। वास्तव में मैं तुमसे कानी कोड़ी भी नहीं चाहता। मैं अपनी मेहनत की रोटी आप ही कमा सकता हूँ। यह सुनकर वक्र भी बहुत पछताने लगा। उसने अपने छोटे भाई की प्रशंसा करते हुए कहा -"भाई ! मैं सोने के पीछे ब्यर्थ ही अपना सारा समय खराब किया। उससे तो यह काला सोना ही, यह धरती ही कहीं बढ़कर है। तुमने उसकी पूजा की। इसलिए तुम केवल अपना पेट ही नहीं पाल सके; बल्कि हम सब की जान भी बचा सके। वास्तव में तुम्हारी कमाई ही सच्ची कमाई है।"

अब दोनों भाई अपने गाँव लौट गए। वहाँ आकर उन्होंने बहुत सी परती जमीन सरकार से माँग ली और खेती करना शुरू किया। अब वक्र ने भी अपनी मेहनत से जीने का पाठ अपने भाई के द्वारा सीख लिया था। कुछ ही दिनों में दोनों भाई बहुत धनवान बन गए और उनका नाम चारों ओर फैल गया। सभी किसान उन भाइयों को अपना आदर्श मानने लगे।

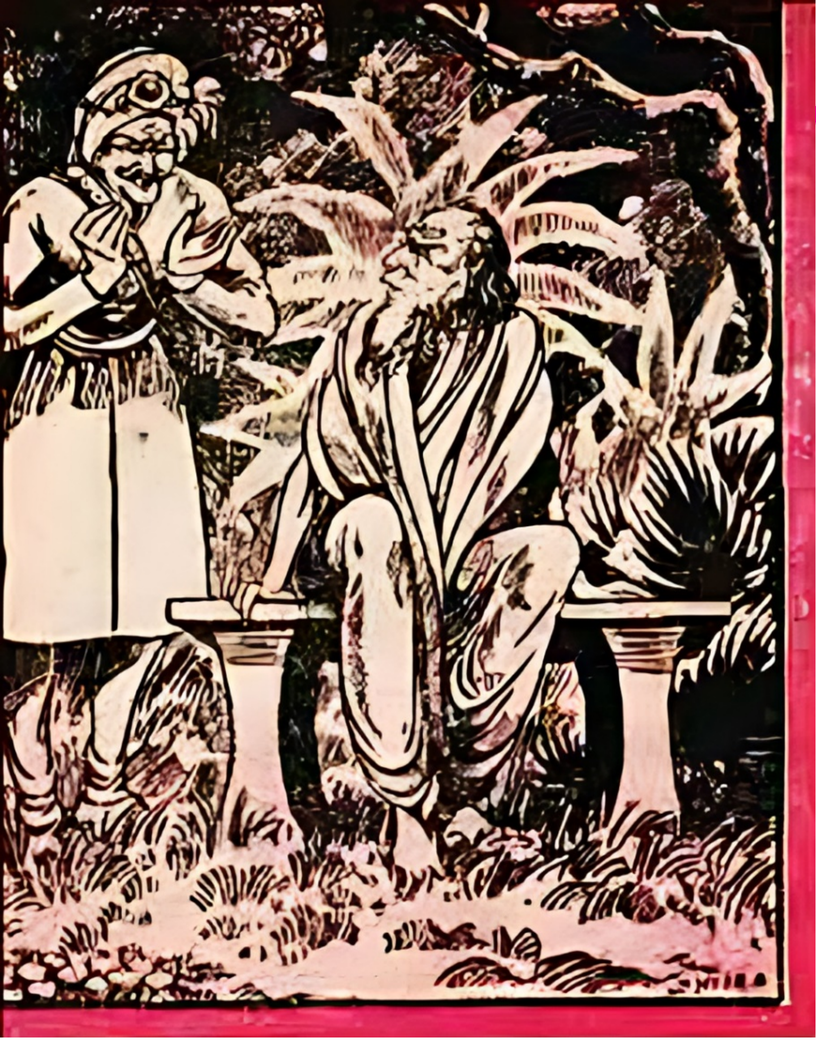




किसी समय एक राजा रहता था। वह प्रजा का अपनी सन्तान के समान पालन-पोषण किया करता था। इसलिए उसे राज्य के सब लोग राजा को बहुत मानते थे। धीरे-धीरे उस राजा का यश संसार के कोने-कोने में फैल गया। दूर-दूर से बड़े-बड़े पण्डित, सन्त साधू और महात्मा लोग भ्रमण करते हुए उस राज्य में आने लगे। राजा भी ऐसे यात्रियों की बड़ी इज्जत करता था। जब तक वह उसके राज में रहते, उनको कोई कमी या तकलीफ न होने पाती थी। राजा को ऐसे यात्रियों के दर्शन करने में और उनसे संसार के सभी देशों का हाल-चाल जानने में बड़ा आनन्द आता था। वह बड़े चाव से उनके उपदेश सुनता और उन पर जरूर अमल करता। इस कारण उसकी प्रजा को नित्य नए सुख पहुँचते रहते थे। यहाँ तक कि उस राजा के शासन की बड़ाई में लोग उसे "रामराज" कहने लगे।

लेकिन उसे राजा का एक कुटिल मन्त्री था। वह बड़ा कञ्जूस था। उसे रुपया पैसा खर्च करना बिल्कुल पसन्द न था। उसे साधु सन्तों से बड़ी चिढ थी। उसकी राय में वह सब आलसी निकम्मे जीव थे और उनकी सहायता करना बड़ा भारी पाप था।

एक बार एक साधु घूमते फिरते उसे राज में आ पहुँचा। राजा ने उसे साधु को अपने दरबार में बुलाया और बड़े चाव से उनके उपदेश सुना। इस तरह दस पन्द्रह दिन बीत गए। दिन दिन साधु के प्रति राजा की श्रद्धा बढ़ती गई। आखिर राजा ने उस साधु से कहा - "स्वामी जी ! मेरी इच्छा है कि आप कुछ वर्ष तक मेरे ही राज में रहे और अपनी सङ्गति से हमें लाभ उठाने दें।" साधु ने भी राजा की बात मान ली।



जिस दिन से वह साधु राज में आया, राजा ने राजकाज में मन लगाना बिलकुल छोड़ दिया। यह देखकर मन्त्री को साधु से बहुत द्वेष हो गया। उसने निश्चय कर लिया कि अपनी चालाकी से किसी न किसी तरह उस साधु को राज्य से निकलवा देना चाहिए। इसीलिए जहाँ कोई मौका मिला कि वह राजा से साधु की शिकायत करने लगता। लेकिन राजा उसकी बात पर कान न देता। वह कहता -"तुम साधु सन्तों की महिमा नहीं जानते। वह भगवान के अवतार होते हैं। उन्हीं के उपदेश से मनुष्य को मुक्ति का मार्ग दिखाई देता है।" उसने मन्त्री को फटकार भी दिया। लेकिन मन्त्री ने अपनी धुन न छोड़ी। उसी तरह राजा के मन में साधु के ऊपर द्वेष पैदा करने की कोशिश करता रहा। लेकिन उस राजा के मन में साधु की इज्जत घटने के बदले और भी बढ़ गई।

आखिर मन्त्री ने एक उपाय सोचा। उसने एक दिन एकान्त में साधु से मिलकर उन्हें अपने घर खाने का न्योता दिया। भोला साधु उसके साथ गया। मन्त्री ने उसकी खूब सत्कार करके खाना परोसवाया। जब साधु खाने बैठा तो उसने कहा -"साधु जी! हमारे देश में लोग प्याज लहसुन ज्यादा खाते हैं। खासकर दावतों में तो खाना ही पड़ता है। मैं आशा करता हूं कि आपको उससे कोई परहेज नहीं है।" तब साधु ने जवाब दिया कि उसे कोई परहेज नहीं। जब साधु खाना खाने लगा तो मन्त्री चुपके वहाँ से खिसक गया और सीधे राजा के पास जाकर बोला - "हुजूर ! मैं आपसे बहुत दिनों से कहता रहा हूँ कि वह साधु बड़ा पाखण्डी है। लेकिन आपको मेरी बातों पर विश्वास न हुआ। आप उसे बड़ा भारी महात्मा समझते हैं। लेकिन वास्तव में उसके जैसा ढोंगी कोई नहीं है। न उसे लोकाचार का ध्यान है ना नीति नियम का। चटोरा

ऐसा है कि खाद्य, अखाद्य सब खा जाता है। उस नीचे की इतनी इज्जत करते देखकर सारा संसार आप पर हँस रहा है। देखिएगा न ? आपको खुद मालूम हो जाएगा।" यह कहकर वह घर लौट गया। इतने में वहाँ साधु का खाना हो गया था। वह वहाँ से जाने की तैयारी कर रहा था। इतने में मन्त्री ने जाकर उससे कहा -"साधु जी ! एक बात तो मैं आपसे कहना भूल ही गया। अपने महाराज को प्याज लहसुन से परहेज है। उन्हें इसकी गन्ध से ही मतली आने लगती है। इसलिए आप आज उनसे बातें करते समय जरा दूर पर बैठिएगा।" यह सुनकर साधु फिर दो-तीन बार अच्छी तरह कुल्ला करके राजा के पास गया। लेकिन मन्त्री की बातें याद करके वह जरा दूरी पर ही बैठ गया। राजा से बातें करते वक्त भी उसने अपना मुँह दूसरी तरफ फेर लिया जिससे राजा को प्याज की गन्ध न लगे।

यह सब देखकर राजा को साधु पर शक हो गया। उसे अब मन्त्री की बातों पर पूरा विश्वास हो गया। उसने सोचा -"वाह ! साधु जी ! तो आप डुबकी मार कर पानी पीते हैं। अच्छा, ठहरिए। मैं आपको इस छल



के लिए अभी मजा चाहता हूँ।" उस राज्य में राजा जिससे नाखुश हो जाता है, उसको दण्ड देने का उसने एक अच्छा उपाय कर रखा था। उसने अपने महल की एक और जमीन के अन्दर एक तहखाना बनवा रखा था। वह जिसे दण्ड देना चाहता, उसे एक पुर्जी लिखकर दे देता। पुर्जी में लिखा रहता कि इस आदमी को 'खूब इनाम' दो। वह बेचारा खुशी से फुला तहखाने में जाता। वहाँ सिपाही लोग उसकी मौत का इनाम देकर यमपुरी भेज देते। इस तहखाने का रहस्य राजा के सिवा और किसी को मालूम न था। यहाँ तक कि

मन्त्री को भी नहीं। राजा ने साधु को इसी तहखाना में भेजने की सोची। उसने कहा -"साधु जी ! आपको मेरे दरबार में आए बहुत दिन हो गए। लेकिन आपने मुझसे कभी कुछ नहीं माँगा। आज मैंने बिना माँगे ही आपको एक इनाम देने का निश्चय कर लिया है। मैं आपको एक पुर्जी लिख कर दूँगा। आप उसे लेकर तहखाना में जाइए और अपना इनाम पा लीजिए।" यह कहकर उसने साधु को पुर्जी लिख कर दे दी और तहखाना का रास्ता भी बता दिया।

साधु तहखाना की ओर चला तो रास्ते में मन्त्री ने उसे रोक कर सारा हाल जान लिया। पुर्जी देखते ही उसके मन में लालच पैदा हो गया। उसने साधु से कहा -"महात्मा जी !सेवक के रहते आप क्यों व्यर्थ कष्ट उठाइएगा ! आप यहीं बैठे रहिए। मैं अभी तहखाना में जाता हूँ और वह इनाम लाकर आपको दे देता हूँ। यह कहकर मन्त्री ने साधु को वहीं बैठकर राह देखने के लिए कहा और खुद पुर्जी लेकर तहखाना में पहुँचा। तहखाना के सिपाहियों ने पुर्जी पढ़ते ही मन्त्री को तलवार के घाट उतार डाला। इधर साधु ने शाम तक मन्त्री की राह देखी। लेकिन जब वह न आया तो उसने सीधे राजा के पास जाकर सारा हाल कह दिया। साधु को ज़िन्दा लौट आया देखकर राजा के अचरज का ठिकाना न रहा। उसने साधु से मन्त्री की पूरी कहानी सुन ली। अब मन्त्री की सारी चालबाजी उसकी समझ में आ गई। उसे बड़ी खुशी हुई उसके हाथों एक निरपराध साधु की जान जाते-जाते बची। उस दिन से उस साधु के प्रति उसकी श्रद्धा और भी बढ़ गई। उसने उसी को अपना मन्त्री बना लिया और उसकी सलाह से राज में न्याय का पालन करने लगा।





बहुत पुरानी कहानी है। एक राजा था। देखने में उसका डील-डौल बड़ा अच्छा था। लम्बा तगड़ा, गोरा चिट्टा। लेकिन वह बेचारा पढ़ने लिखने में बिल्कुल कोरा था। काला अक्षर भैंस बराबर। यही नहीं उसके मगज में बिल्कुल भूसा भरा था। उसमें एक गँवार की जितनी भी सूझ बुझ न थी। तिस पर वह परले दर्जे का हठी भी था। जो मन में आता वही करता। दूसरों की सलाह लेने में वह अपनी हेठी समझता था। ऐसे आदमी को कोई क्या कह सकता है !

एक दिन वो राजा शिकार खेलने गया। वहाँ उसे एक बड़ा बनमानुष दिखाई दिया। वह आदमी के जितना लम्बा था और आदमी की ही तरह खड़ा होकर चलता था।

जब वह बन्दर शान के साथ धीरे-धीरे कदम रखता हुआ चलने लगा, तो बस राजा मुँह बाए देखता खड़ा रह गया। वह ज्यों ज्यों उसे देखता था त्यों त्यों उसके मन में उसके ऊपर शौक बढ़ता जाता था। आखिर उसने सोचा -"ऐसा जानवर मेरे राज में क्यों नहीं है ?" इसलिए उसने तुरन्त सिपाहियों को हुक्म दिया -"जाओ ! उसे बन्दर को पकड़ लाओ।" यह सुनकर सिपाहियों ने सोचा -"सचमुच राजा की बुद्धि मारी गई है। वीरता दिखाने के लिए बाघ या शेर को पकड़ लाया जा सकता है। मांस खाने के लिए मन मचल गया हो तो हरिण मार लाया जा सकता है। लेकिन बन्दर पकड़ना ! कौन ऐसा उल्लू होगा जो शिकार खेलने जाकर बन्दर पकड़ता फिरे ?" लेकिन वे करते क्या ? राजा का हुक्म था। टाला नहीं जा सकता था। इसलिए उन्होंने उस बन्दर को पकड़ा। राजा उसको लेकर नगर को लौट आया। महल में पहुँचकर राजा ने अपने मन्त्री को बुलाया और कहा - "मन्त्री ! जरा

मोहन सुराना



इस बन्दर की ओर देखो। यह नर से भी बलवान है। इसीलिए इस वानर कहते हैं। जरा इसकी और तो देखो ! कैसा गठीला जवान है। मेरी समझ में यह बड़ा बुद्धिमान भी जान पड़ता है। हम इसे अपने अखाड़े में ले जाकर तलवार चलाना, कुश्ती लड़ना बगैरह सिखाएँ तो आगे चलकर बड़ा वीर निकलेगा। इससे सचमुच हमारे दरबार की शोभा बढ़ेगी।" राजा के उत्साह का ठिकाना न था। पर राजा की बात सुनकर मन्त्री ने कहा -"महाराज आपने जो कहा सो ठीक है। लेकिन बड़ों का कहना है कि लक्ष्मी का और बन्दर की समझ का विश्वास नहीं करना चाहिए। अगर हम इस बन्दर को कुश्ती लड़ना बगैरह सीखाकर इसके हाथ में एक तलवार दे देंगे तो फिर कौन जाने कि वह क्या करेगा ? इसीलिए मैं समझता हूँ कि इस बानरोत्तम को चिड़ियाघर में बन्द रखना ही सबसे अच्छा होगा। तब लोग इसका तमाशा देखकर मन बहलाएँगे।" लेकिन उस मूर्ख राजा पर मन्त्री की बातों का कोई असर न हुआ। वह अपनी बात पर ही अड़ा रहा। आखिर मन्त्री ने लाचार होकर उस बन्दर को अस्त्र-शस्त्र चलाने की शिक्षा देने के लिए एक उस्ताद को नियुक्त किया। वानर ने भी बड़ी होशियारी से थोड़ी समय में सारी बिद्याएँ सीख ली।

कुछ दिन बाद राजा के मन में शौक पैदा हुआ कि -"देखें ! हमारे वानर ने कहाँ तक हथियार चलाना सीखा है। इसलिए उसने एक दिन उसकी परीक्षा लेने की ठहराई। उसने भरे दरबार में उस्ताद और शिष्य दोनों को बुलाकर कहा - "उस्ताद जी ! हम आपके शिष्य का शस्त्र कौशल देखना

चाहते हैं। तब उस्ताद ने नजदीक के पेड़ के ऊपर एक चिड़िया की ओर इशारा करके बन्दर से कहा - "जाओ ! उस चिड़िया का सिर काट लाओ।" गुरु की आज्ञा सुनते ही वह वानर दरबार से उठा और उछलता कूदता पल में उस पेड़ पर चढ़ गया। उसने बड़े कौशल से तलवार निकाली और ऐसी सफाई से हाथ चलाए की चिड़िया का सिर धड़ से जुदा होकर नीचे गिर पड़ा। उसकी होशियारी और फुर्ती देखकर सब लोग वाहवाही करने और तालियाँ बजाने लगे। बस ! अब राजा की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने एक बार मन्त्री की तरफ मुस्कुराते हुए देखा। मानो पूछ रहा हो कि - "मेरी बात ठीक निकली कि नहीं ?" लेकिन मन्त्री ने सोचा कि कभी मेरा भी मौका आएगा और चुप रह गया।

दूसरे दिन राजा ने वानर को वेशकीमती कपड़े पहनाए। फिर उसने दरबार बुलाया। भरे दरबार में उसने अपने गले से मोतियों का हार निकाल कर बन्दर को पहना दिया और कहा -"मैं कल इस वानर



की वीरता देखकर फूला न समया। मैं इस वीर पुरुष का उचित सत्कार करना चाहता हूँ। इसलिए इसे आज से मैं अपने शरीर-रक्षक के पद पर नियुक्त करता हूँ। राजा की बातें सुनते ही सब लोग तालियाँ बजाने लगे और इर्षा भरी नजरों से बन्दर की ओर देखने लगे।

लेकिन मन्त्री ने सोचा -"राजा मेरी बात सुने या ना सुने, मुझे तो अपना धर्म निभाना ही होगा।" इसलिए उसने दरबार खत्म होते ही राजा से कहा-



"महाराज ! शरीर-रक्षक का पद बड़ा महत्वपूर्ण होता है। उसे हर वक्त अपने स्वामी के साथ रहकर बड़ी होशियारी से उसकी रक्षा करनी पड़ती है। क्योंकि राजाओं के चारों ओर बहुत से षड़यन्त्र होते रहते हैं। क्या बन्दर यह सब काम कर सकता है ? क्या उसमें इतनी समझ है ? नहीं। इसलिए आप बन्दर को पुरस्कार भले ही दें। पर मेरी समझ में उसे अपना शरीर-रक्षक बनाना उचित नहीं जँचता। लेकिन राजा ने उसकी एक न सुनी। उल्टे उसे मन्त्री की बातों से गुस्सा आ गया। लाचार होकर मन्त्री ने उसे सलाह देना छोड़ दिया।

दिन-दिन बन्दर पर राजा का प्रेम बढ़ता ही गया। वह जहाँ जाता उसे साथ ले जाता और बार-बार उसका शस्त्र-कौशल देखकर मन बहलाता। वह दरबार में भी हमेशा उसी की प्रशंसा करता रहता। लोग भी राजा के शरीर-रक्षक को देखकर बहुत खुश हो रहे थे।

कुछ दिन बाद राजा का जन्मदिन आया। उस दिन राजभर में उत्सव मनाया गया। दरबार में अनेक रईसों और उमरावों ने नज़राने लाकर राजा की भेंट किए। एक फूल बेचने वाले ने फूलों का एक सुन्दर हर लाकर राजा की भेंट की। राजा को यह हर बहुत पसन्द आया। इसलिए उसने उसे अपने गले से नहीं निकला।

थोड़ी देर बाद जब खेल तमाशा से थका माँदा राजा महल में लौटा, तो वह माला पहने ही लेट गया। नींद के मारे आंखें मूँदी जाती थी। इसलिए उसने अपने शरीर-रक्षक को बुलाकर कहा -"मैं थोड़ी देर आराम करना चाहता हूँ। इसलिए तुम दरवाजे पर पहरा देते रहना और किसी को अन्दर न आने देना। यह कहकर राजा ने आँखें मूँद ली और तुरन्त खर्राटे लेने लगा।

राजा के आज्ञानुसार शारीर-रक्षक दरवाजे पर पहरा देता रहा। राजा के आराम में खलल डालने के लिए वहाँ कोई नहीं आया। लेकिन फूलों की गन्ध से खींच कर एक भौंरा कहीं से झङ्कार करते हुए आया।

शरीर-रक्षक ने उस भौंरे को बहुत रोका। लेकिन वह किसी न किसी तरह उससे बचकर कमरे में घुसा और राजा के गले में फूलों के हार पर जा बैठा।

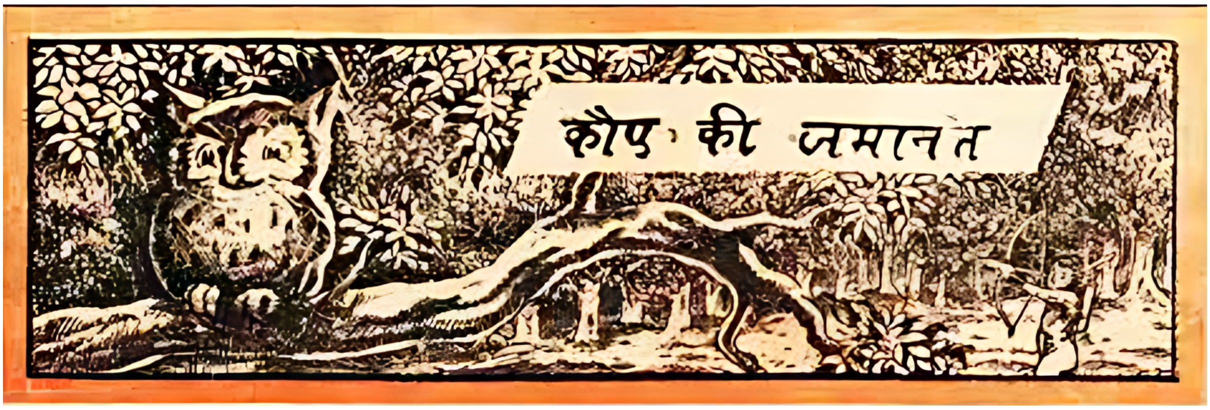
अब उस वीर वानर को भौंरे पर बड़ा क्रोध आया। उसने सोचा - "किसकी मजाल है कि मेरे यहाँ रहते राजा के कमरे में प्रवेश कर जाए और राजा की आज्ञा का उल्लङ्घन करें !यह सोचकर वह एक छलाङ्ग में अन्दर चला गया और तलवार निकालकर एक ही बार में उसने राजा के गले पर बैठे हुए भौंरे के दो टूक कर दिए।

शरीर-रक्षक की तलवार की बार से भौंरे के साथ-साथ बेचारे राजा का सिर धड़े से अलग हो गया। सारा बिस्तर उसके गरमागरम लहू से तर हो गया।



वह बन्दर फिर जाकर प्रसन्न-चित्त से दरवाजे पर पहरा देने लगा। उसने राजा की आज्ञा का पालन किया था। और क्या चाहिए ?

उसने यह नहीं सोचा कि उसकी बेवकूफी के कारण राजा की जान चली गई है। कहने का मतलब है कि मूर्ख नौकर के कारण मलिक की जान भी खतरे में पड़ जाती है। बड़ों की बात माननी चाहिए। हठ-धर्मी से नुकसान ही नुकसान है। राजा ने अगर मन्त्री की बात मान ली होती तो नानक उसकी जान न जाती। इसलिए बच्चों ! कभी मूर्खता-पूर्वक हठ न करो।



पुराने जमाने में उल्लू-भाई आज की तरह रोशनी देखकर भागते न थे। उस समय वह भी बाकी सभी पञ्छियों की तरह दिनभर चार ढूँढ़ते फिरते और रात को अपने घोंसले में आराम करते। अब शायद आप पूछेंगे कि आजकल वे क्यों दिन में चोरों की तरह दुबक कर रहते हैं और रात में मौज से घूमते फिरते हैं। इसके बारे में एक दिलचस्प कहानी है। जरा कान लगाकर सुनिए।

उन दिनों में जब वे दिन में बाहर निकाला करते थे, उल्लू भाई एक दिन जङ्गल की सैर करने चले। वह उड़ते हुए जाकर एक पेड़ की डाल पर सुस्ताने के लिए बैठ गए। इतने में एक शिकारी ने उन्हें देख लिया और उन पर तीर का निशाना लगाकर मारा। तीर जरा चूक गया। इसलिए उल्लू भाई की जान बच गई। पर वह घायल होकर नीचे की झाड़ी में गिर पड़े। शिकारी ने चारों ओर उन्हें ढूँढा। लेकिन जब वह नहीं मिले तो हताश हो कर घर लौट गया।

थोड़ी देर बाद झाड़ी में पड़े उल्लू भाई को जरा होश आया। जान तो बच गई थी। लेकिन अब वे दर्द के मारे चीखने लगे। कगलाल ने जब उनका कराहना सुना तो उसको उन पर तरस आई। उसने सोचा -"हर एक आदमी पर कभी न कभी मुसीबत टूट ही पड़ती है। इसलिए मुसीबत में हमें एक दूसरे की मदद करनी चाहिए।" यह सोचकर वह उल्लू भाई को उठाकर डॉक्टर कोकिल-राम के अस्पताल में ले गया और वहाँ भर्ती कर दिया। डॉक्टर कोकिल-राम को उल्लू भाई का सब हाल मालूम था। वह जानता था कि वह बड़े भारी कञ्जूस है। उसे मालूम था कि ऐसे लोग मुसीबत

लता देवी

मैं फँसकर गिड़गिड़ाते हैं। मगर समय पर चकमा देने से बाज नहीं आते। डॉक्टर ने ऐसे मरीजों को बहुत -बहुत देखा था जो चङ्गे हो जाने के बाद फीस चुकाए बिना चले गए थे। इसलिए उसने उल्लू को भर्ती करते समय कगलाल से कहा - "प्यारे दोस्त ! तुम बहुत भोले भाले हो। तुम समझते हो की मीठी बातें करने वाले सभी भले आदमी हैं। दुनिया का रङ्ग-ढङ्ग तुम नहीं जानते। लेकिन मैं उल्लू भाई को खूब जानता हूँ। मेरी समझ में उनसे किसी तरह का लगाव नहीं रखना चाहिए। मेरी तुमसे पुरानी दोस्ती है। इसलिए मैंने यह तुमसे कह दिया।"

लेकिन कौए को अपनी बात से मुकर जाना पसन्द नहीं था। उसने कहा -"डॉक्टर ! शायद तुम्हारा कहना ठीक है। लेकिन मैं उल्लू से पहले ही वादा कर चुका हूँ कि मैं उसका इलाज कराऊँगा । इसलिए मैं अब उसे निराश नहीं कर सकता। अगर उल्लू ने तुम्हें धोखा दिया, तो उसकी जिम्मेदारी मुझ पर होगी। तुम इलाज करो। मैं उसका



जमानतदार बनता हूँ।" आखिर डॉक्टर को लाचार होकर उल्लू का इलाज करना पड़ा। उसकी कृपा से उल्लू भाई थोड़े ही दिनों में पूरी तरह अच्छे हो गए। लेकिन जब डॉक्टर की फीस देने का समय आया, तो उल्लू को शैतानी सूझी। वह एक रात चुपके से उठकर चम्पत हो गए। सवेरे डॉक्टर कोकिलराम ने आकर देखा तो मरीज की खाट खाली पड़ी थी। तब डॉक्टर ने कगलाल को बुला भेजा। उल्लू की बेईमानी की बात सुनकर कौवे का मुँह सफेद फक हो गया। वह मन ही

मन पछताने लगा कि मैंने डॉक्टर की बात क्यों न मानी। उसके भोले हृदय को यह जानकर बड़ा धक्का लगा कि संसार में ऐसे ऐसे बेईमान और कृतघ्न जीव भी रहते हैं।

उसने अपने दोस्त डॉक्टर से कहा - "डॉक्टर ! जो हो गया सो हो गया। तुमको मेरे कारण व्यर्थ कष्ट उठाना पड़ा। इसके लिए मैं बहुत दुखी हूँ। उल्लू के इलाज में कितना खर्चा लगा है बता दो। मैं चुका दूँगा।" यह सुनकर डॉक्टर कोकिलराम घर के अन्दर गया और अपनी बीवी से सलाह मशवरा किया। थोड़ी देर बाद उसने बाहर आकर कौए से कहा -"दोस्त ! तुमने भलाई के बदले बुराई पाई। लेकिन इसमें तुम्हारा क्या दोष था ! तुम बहुत भोले भाले हो। सहज ही लोगों पर विश्वास कर लेते हो। इसलिए मैंने तुम्हें पहले ही जता दिया था। लेकिन तुम न माने। तुम कहते हो कि उल्लू की फीस मैं चुका दूँगा। लेकिन मैं एक दोस्त के नाते तुमसे यह फीस नहीं ले सकता। हाँ , मैं कोई ऐसा काम जरुर करना चाहता हूँ जिससे दुनिया को उल्लू की कृतघ्नता की कहानी हमेशा याद रहे। इसके लिए मैंने अपनी बीवी के साथ सोच विचार कर एक निश्चय किया है। मेरी बीवी अपने अण्डे तुम्हारे घोसले में रख देगी। तुमको उन्हें सेकर बच्चे बनवाने पड़ेंगे। लोग इस घटना को देखकर हमेशा अचरज करेंगे। इस तरह उन्हें उल्लू की कहानी भी हमेशा याद रहेगी। कागलाल ने भी बड़ी खुशी से कोकिलराम की बात मञ्जूर कर ली।

उसके बाद उल्लू भाई कभी दिन में बाहर नहीं निकलते हैं। कभी वे भूले भटके बाहर आ भी जाते हैं तो, कौआ उन्हें चोञ्च मार कर दूर भगा देता है।



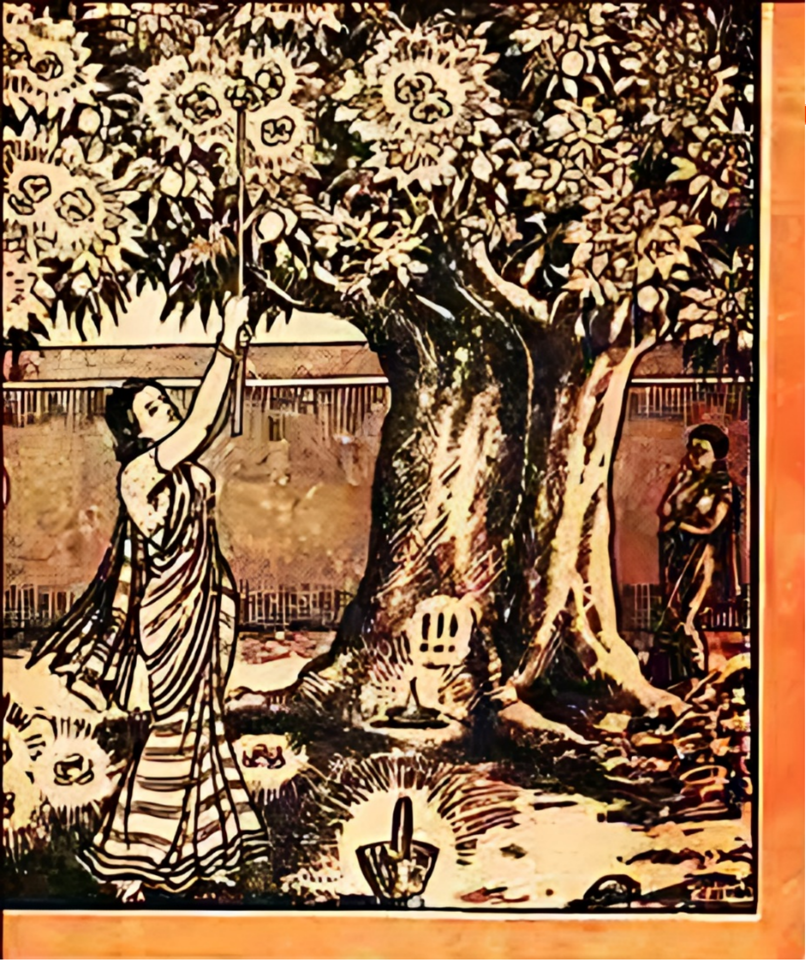


बहुत दिनों की बात है। आन्ध्रप्रदेश के उत्तर में एक घना जङ्गल था। उस जङ्गल में एक भील एक छोटी सी झोपड़ी बनाकर रहा करता था। उसकी दो स्त्रियाँ थी। बड़ी स्त्री बहुत सुशील और गुणवती थी। लेकिन छोटी बहुत झगड़ालू थी। क्रोध, द्वेष और इर्षा आदि दुर्गुण उसमें कूट-कूट कर भरे हुए थे। वह अपनी सौत को बहुत तङ्ग करती थी। बात-बात पर झगड़ती थी। लेकिन बड़ी स्त्री बहुत शान्त स्वभाव की थी। इसलिए उसे वह कुछ नहीं कहती थी। इससे छोटी की शैतानी दिन-दिन और भी बढ़ती गई। अपनी सौत को दबते देख वह दिन-दिन और भी सर चढ़ने लगी। वह अब हर एक बात में जिद करने लगी और अपने पति से उसकी शिकायत करने और चुगली खाने लगी।

इस तरह दोनों में दिन-दिन अनबन बढ़ती गई। घर में हर वक्त कोहराम मचा रहता था। इनके मारे आखिर भील की नाकों दम हो गया। इसलिए उसने अपनी झोपड़ी को दो हिस्सों में बाँट दिया। पूर्व वाले हिस्से में बड़ी औरत और पश्चिम के हिस्से में छोटी रहने लगी। अब वह खुद बारी-बारी से दोनों के घर में एक-एक दिन रहने लगा।

भील की बाड़ी में एक बैल और एक पारिजात सट कर बड़े और बहुत बड़े पेड़ बन गए थे। जब इस घर के दो हिस्से कर दिए गए, तो पेड़ ठीक दोनों के बीचों बीच आ गया। इसलिए दोनों स्त्रियाँ अपने-अपने हिस्से की डालों से फूल तोड़ लिया करती थी। भील ने सोचा -"चलो, यह भी अच्छा ही

अमरलाल



हुआ। अब तो पेड़ का भी बँटवारा हो गया है। अब इन दोनों को झगड़ने का कोई मौका न मिलेगा। वह अब आशा करने लगा कि कुछ दिनों तक उसके घर की शान्ति भङ्ग न होगी।

लेकिन छोटी औरत के हृदय में ईर्ष्या की आग जलती ही रही। वह अब भी बड़ी को देखकर जला करती थी। वह हरदम अपनी सोच से झगड़ने का उसे तङ्ग करने का मौका ढूँढती रहती थी।

भील की बड़ी औरत भगवान में बड़ी भक्ति रखती थी। वह जानती थी की बेल की पत्तियाँ महादेव पर चढ़ाई जाती हैं और पारिजात के फूल भगवान विष्णु को बहुत प्यारे हैं। बचपन में ही उसने इसके बारे में बड़े-बूढ़ों से कई कहानियाँ सुनी थी। इसलिए वह उस पेड़ के नीचे रोज बुहार कर पानी छिड़क देती थी। वह उस जगह को हमेशा साफ बनाए रखती थी और रोज बड़ी भक्ति से उस पेड़ की पूजा करती थी।

लेकिन छोटी की न भगवान में भक्ति थी और न अपने पति में। तिस पर वह बड़ी आलसी भी थी। इसलिए घर में झाड़ू देने के बाद सारा कूड़ा करकट बटोर कर उस पेड़ के नीचे डाल देती थी।

कुछ दिन बाद भगवान की कृपा से बड़ी औरत के हिस्से वाली डालियों पर रोज सोने के फूल फूलने लगे। लेकिन छोटी औरत के हिस्से में वही मामूली पारिजात के फूल फूलते थे। सोने के फूलों के कारण बड़ी औरत कुछ ही दिनों में बहुत धनवती बन गई।

यूँ कुछ दिन बीत गए। छोटी औरत को पता चल गया कि उसकी सौत के हिस्से

बाली डालों पर सोने के फूल खिल रहे हैं। उसने सोचा कि उसके पति ने उसे धोखा दिया है और जानबूझकर यह हिस्सा उसको दे दिया है जिससे सोने के फूल उसकी सौत को मिले। इसलिए उस दिन जब उसका पति घर आया तो उसने कहा -"मुझे इस घर का पूरब वाला हिस्सा चाहिए।" बेचारे भील को सोने के फूलों की बात कैसे मालूम होती !इसलिए उसने कहा -"अच्छा ! अगर तुम पूरब वाला हिस्सा चाहती हो, तो वही ले लो। इसमें क्या धारा है !" उसने तुरन्त बड़ी औरत से यह बात कह दी। वह बेचारी गऊ सी सीधी थी। तुरन्त राजी हो गई। अब बड़ी औरत पश्चिम वाले हिस्से में आकर रहने लगी। उसने आते ही तुरन्त पेड़ के नीचे झाड़-बुहार कर साफ कर दिया और रोज उस पेड़ की पूजा करने लगी। दूसरे ही दिन से उसके हिस्से में फिर सोने के फूल फूलने लगे। इधर छोटी औरत अपने पति से झगड़ कर पूर्व वाला हिस्सा तो माँग लिया। लेकिन वहाँ भी



उसका पुराना ढङ्ग जारी रहा। वह अपनी आदत के मुताबिक घर का सारा कूड़ा करकट जमा कर पेड़ के नीचे डाल देती। इसलिए उसके आते ही पूर्व वाले हिस्से में सोने के फूल लगना बन्द हो गया।

दो-तीन दिन बाद छोटी को फिर मालूम हुआ कि इस बार पश्चिम के हिस्से में सोने के फूल उगने लगे हैं। उसने अपनी आँखों से यह एक बार देख भी लिया। वह फिर दाह से जलने लगी। इसलिए उसने



अपने पति को बुलाकर कहा -"चाहे जिस तरह हो, मुझे वह सोने के फूल रोज़ ला दिया करो।" अब बेचारा भील क्या करें ! उसे चोरी करना बिल्कुल पसन्द नहीं था। इसलिए उसने उसे साफ कह दिया कि यह काम उससे नहीं होगा। मगर छोटी स्त्री रोग से तङ्ग करने लगी। आखिर नाकों दम होकर भील ने सोचा कि "यह पेड़ ही सारे झगड़ों का मूल है।" यह सोचकर उसने एक दिन एक कुल्हाड़ी ली और उस पेड़ को जड़ से काट डाला। दोनों पेड़ हहरा कर गिर पड़े। इतने में उस भील ने देखा कि दोनों पेड़ के तनों के बीच में खून की पतली धार बह रही है। उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। पेड़ के तनों में से यह खून की धारा कैसे बह रही है ! उसने गौर से तनों के चारों ओर देखा। लेकिन कुछ न दिख पड़ा तब उसने कुदाल लाकर तने के नीचे खोद कर देखा। तुरन्त "हाय ! हाय ! मैंने देवता पर कुल्हाड़ी चला दी।" यह कहकर चिल्लाते हुए वह झोपड़ी की और भागा। उसकी चिल्लाहट सुनकर उसकी दोनों औरतों ने बाहर आकर देखा।

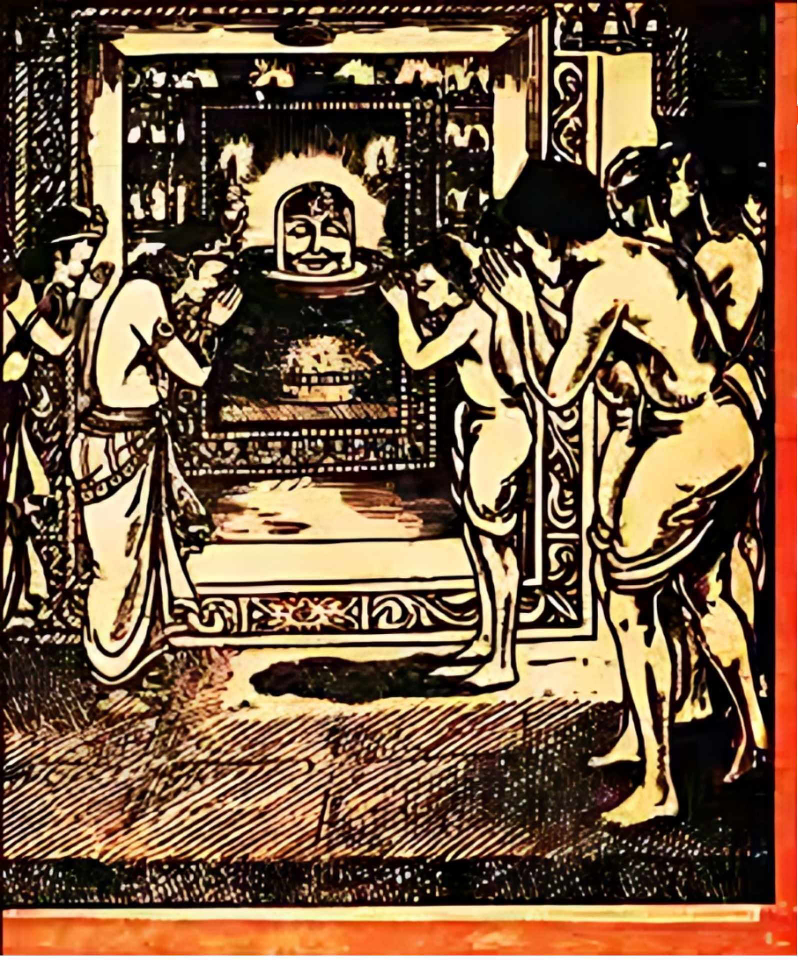
उस पेड़ के तने में शिव जी का एक लिङ्ग था। उसके आदमी की तरह ही नाक, कान आँखें, मुँह वगैरह सब कुछ थे। उसके सिर पर जिस जगह कुल्हाड़ी लगी थी, वहाँ कट गया था और उसमें से खून बह रहा था। यह देखकर भील बहुत पछताने लगा। उसने और उसकी पत्नी दोनों ने मिलकर वह घाव धोए। फिर भील ने जङ्गल से जड़ी-बूटियाँ लाकर उसका रस निकालकर उस घाव पर लगाए।



वह भील अब मन ही मन डरने लगा कि इस अपराध की उसे न जाने क्या सजा मिलेगी !उस रात बेचारे को बिल्कुल नींद न आई। आखिर रात के चौथे पर उसकी आँखें झपक गई तो उसने एक सपना देखा। सपने में महादेव उसे कह रहे थे -"रे भील ! तुम डरो मत। तुमने यह अपराध अनजाने में किया। इसमें तुम्हारा क्या दोष था ? अब मैं चाहता हूँ कि तुम कल ही सवेरे यहाँ से चले जाओ। इसके बाद तुम इस जङ्गल के निकट वाले शहर के राजा से यह सारा हाल कह सुनाओ। इससे तुम्हारे सारे सङ्कट दूर हो जाएँगे। यह कहकर वह अन्तर्धान हो गए। थोड़ी देर बाद भील आँखें मलते हुए उठा और अपनी दोनों स्त्रियों को भी जगाया। जब उसने उन्हें अपने सपने का हाल सुनाया तो वे भी अचरज में पड़ गई। तिस पर उसकी बड़ी स्त्री को ऐसी बातों पर बड़ा विश्वास था। इसलिए उसने अपने पति से अनुरोध किया कि चलो यहाँ से जल्दी चले जाएँ। भगवान की आज्ञा वह थोड़ी देर के लिए भी टालना न चाहती थी।

सवेरा होते ही भील अपनी दोनों स्त्रियों को साथ लेकर एक दूसरे जङ्गल में रहने चला गया। इस विचित्र घटना का बृतान्त को सुनाने के लिए वह दूसरे ही दिन शहर की ओर दौड़ा।

सारे शहर में भील की कहानी एक कान से दूसरे कान में फैल गई। जहाँ देखो वहीँ उसकी चर्चा होने लगी। कुछ लोगों ने किले में जाकर राजा से भी यह बात कही।



उसकी बात सुनकर राजा को भी बड़ा अचरज हुआ। अद्‌भुत शिवलिङ्ग का दर्शन करने के लिए राजा अपने परिवार सहित राजधानी से चला।

उसे जङ्गल के नजदीक "वंशधारा" नामक एक नदी बहती थी। उसके तट पर भीलो की एक छोटी सी बस्ती थी। राजा ने वहाँ जाकर उस शिवलिङ्ग के बारे में पूछताछ की। उन्होंने कहा कि -"हाँ। ऐसा एक लिङ्ग इस जङ्गल में है।" तब राजा ने पूछा कि वह स्थान यहाँ से कितनी दूर है। तब उन्होंने बताया - "महाराज ! वह जगह यहाँ से दूर नहीं है। सिर्फ दो मिल के फासले पर है। उधर देखिए न ! वह जो शिखर दिखाई देता है, वह उसी देव मन्दिर का है।" राजा ने जब उस ओर देखा तो वह शिखर सुनहली धूप में सोने का सा चमक रहा था। यह देखकर सब लोग दाँतों तले ऊँगली दबाने लगे। रातों-रात यह मन्दिर कैसे तैयार हो गया ?

राजा ने उसे गाँव वालों से पूछा -"यह मन्दिर किसने बनवाया है ?"

"महाराज ! यह तो हम नहीं जानते। रात भर हमें उस जगह भारी रोशनी दिखाई पड़ी। साथ ही बहुत से लोगों के घूमने फिरने की और बातें करने की हलचल सुनाई दी। तमाशा देखने के लिए हम सब उस ओर गए। लेकिन राह में हमें बहुत से बाघ, शेर, भालू आदि जङ्गली जानवर दिखाई दिए। उनके डर के मारे हम आगे न बढ़ सके। हम सब घर लौट आए। जब हमने सवेरे उठकर देखा तो वह मन्दिर दिखाई दिया। रातों-रात मन्दिर तैयार करना क्या आदमी के लिए

मुमकिन है ? इसलिए हमने समझा कि यह मन्दिर खुद देवताओं ने बनाया है। हम उसके बारे में इतना ही जानते हैं।" उन्होंने कहा। यह सुनकर सबका आश्चर्य और भी बढ़ गया। वे जल्दी-जल्दी नदी पार कर मन्दिर के निकट गए। उस मन्दिर के पीछे वंशधारा नदी बहती थी। उसमें नहा धोकर सबने मन्दिर में प्रवेश किया। ऊपर चाँदी के दो चिरागदानों में दीप जल रहे थे। उस प्रकाश में उन्होंने मनुष्य के से मुँह वाले उस शिवलिङ्ग को देखा। उसके सिर पर उन्हें एक छोटा सा घाव भी दिखाई दिया। तब उन्होंने जान लिया कि वही घाव भील की कुल्हाड़ी की चोट से हुआ है। लेकिन उन्हें आसपास कहीं बेल या पारिजात का पेड़ या भील की झोपड़ी नहीं दिखाई दी। तब उस राजा ने पण्डितों की सलाह लेकर उस देवता का नाम "मुखलिङ्गेश्वर" रखा क्योंकि उस लिङ्ग का मुँह ठीक आदमी की तरह था। फिर सब लोगों ने मिलकर बड़ी भक्ति के साथ उसे देवता की पूजा की।



दूसरे दिन राजा ने उस भील को बहुत सा धन दिया क्योंकि उस भील के द्वारा ही सब लोगों को उस लिङ्ग का पता चला था।

तब भील को अपने स्वप्न में ईश्वर की बातें याद आई। उसने सोचा कि यह सब उस देवता की कृपा है। उस दिन से ईश्वर पर उसकी भक्ति और भी बढ़ गई।

मन्दिर बना-बनाया हुआ था। इसलिए राजा ने पूजा करने के लिए पुजारी की नियुक्ति की । उन पुजारियों के लिए उसने वहाँ घर भी बनवा दिए। धीरे-धीरे वहाँ एक

गाँव बस गया। राजा ने उसे गाँव का नाम "मुखलिङ्गपुर" रख दिया।

जिस जगह पहले उस भील की झोपड़ी थी, ठीक उसी जगह शिव जी का मन्दिर उठ खड़ा हुआ। आज भी उस जगह बड़ी धूमधाम से पूजा होती है। बड़े प्रेम से अभिषेक होता है। हर साल महाशिवरात्रि के दिन वहाँ बड़ा भारी उत्सव होता है और वह बहुत से लोग दूर-दूर से आते हैं।

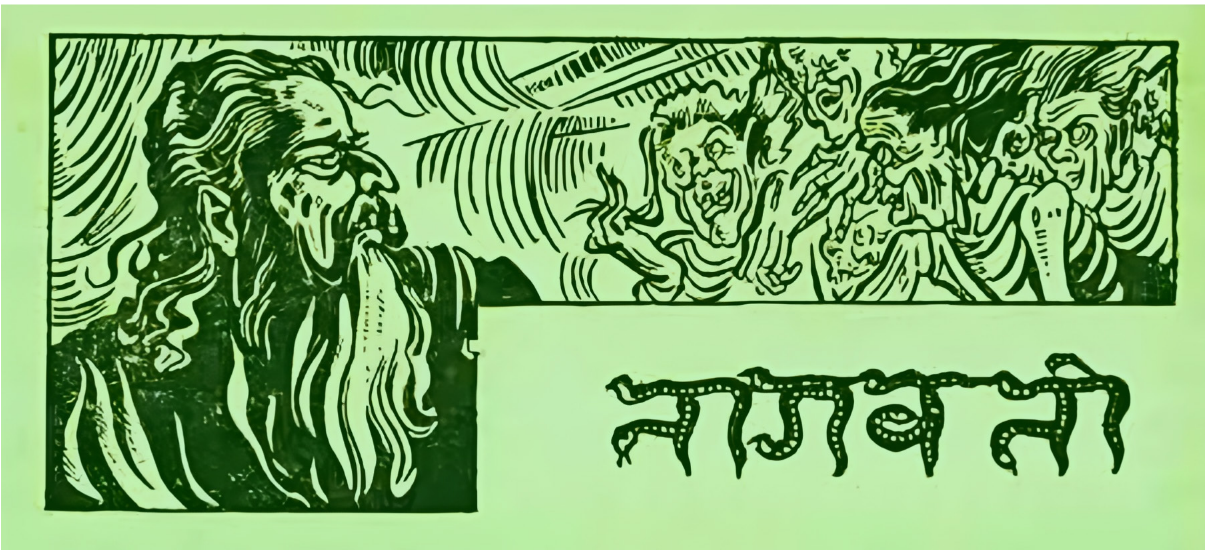
* * * * *

कुछ दिन बाद वहाँ जमीन जोतने वालों और कुएँ खोदने वालों को मिट्टी में जगह-जगह बहुत से शिवलिङ्ग मिलने लगे। उस गाँव के चारों ओर जहाँ देखो वहाँ शिवलिङ्ग ही शिवलिङ्ग थे।

तब लोग किसी को "सोमेश्वर", किसी को "भीमेश्वर" आदि नाम से पुकारने लगे और उनके लिए मन्दिर भी बनवाने लगे। आज भी जब हम वहाँ जाते हैं तो हमें वंशधारा नदी के किनारे खेतों में, बगीचों में जगह-जगह शिवलिङ्ग पड़े दिखाई देते हैं। लोगों का कहना है कि वहाँ एक कम करोड़ शिवलिङ्ग है। मगर उसे तीर्थ में वंशधारा नदी मन्दिर के पीछे से होकर बहती है। यह एक बड़ा दोष माना जाता है। नहीं तो कहा जाता है कि उस क्षेत्र का काशी के समान ही महत्व होता। वहाँ के लोग अब भी विश्वास करते हैं कि तीन साल लगातार खलिङ्गेश्वर के दर्शन करने से काशी विश्वेश्वर के दर्शन करने का फल मिलता है और तीन वर्ष लगातार वंशधारा में गोते लगाने से गङ्गा नहाने का फल मिलता है।

बच्चों ! अगर तुम भी बिना काशी यात्रा के ही काशी जी जाने का पुण्य प्राप्त करना चाहते हो, तो यह मौका अच्छा है। जाओ ! खलिङ्गेश्वर के दर्शन करके वंशधारा में डुबकियाँ लगाओ।





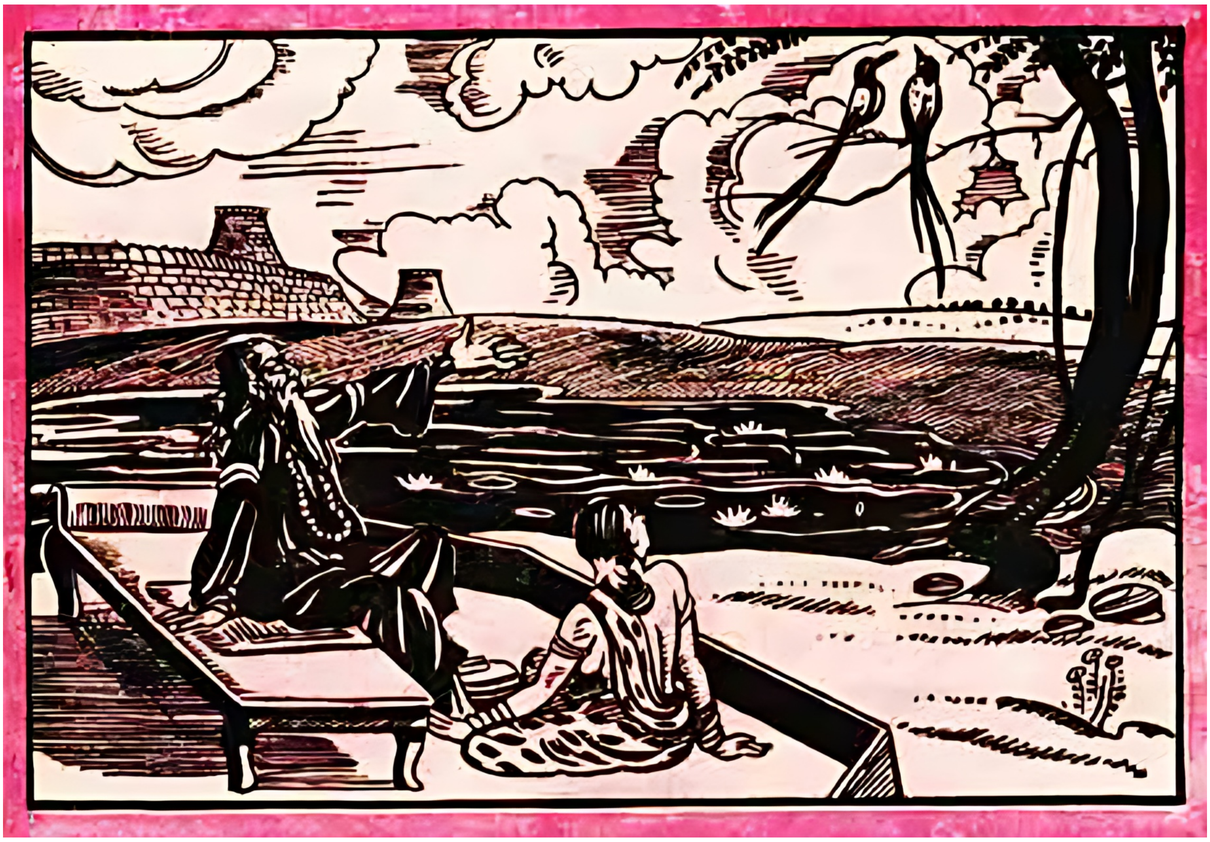
श्रीनगर से बारह योजन की दूरी पर "नागवाडीह" नामक एक टीला था। उस टीले पर एक जादूगर रहता था। उसका एक बड़ा भारी किला भी था। किले में सात चाँदी के और चौदह सोने के महल थे। उनके बीचों बीच एक चारमीनार वाली मस्जिद थी। उस मस्जिद में बैठकर जादूगर अपनी जादू की किताबें उलटता रहता था। उसको बहुत से जन्तर-मन्तर मालूम थे। इसलिए सब तरह के भूत प्रेत आदि उनका कहना मानते थे। सात सौ सफेद भूत और तीन सौ करिया भूत उसका इशारा पाते ही हाथ जोड़कर सामने आ खड़े हो जाते थे। वह जादूगर हमेशा एक फकीर का भेष बनाए रहता था। इसलिए सब लोग उसे भूतहा फकीर कहा करते थे।

फकीर ने चुटकी बजाई। तुरन्त धोबी भूत ने आकर मसाल जलाई। नाई भूत ने आकर बाल बनाए। कुम्हार भूत ने आकर खाना पकाया। ग्वाला भूत दूध ले आया। कहार भूत पानी ले आया। एक भूत जाकर उसके पाँव सहलाने लगा। एक बूढ़ा भूत वहाँ पर बैठकर कहानी सुनाने लगा।

इतने में पूरब से एक पञ्छी और पश्चिम से एक पञ्छी आकर फकीर के सामने के पेड़ की डाल पर बैठ गए। तब फकीर ने अपनी पत्नी प्यारीबाई को बुलाकर कहा "प्यारी ! इन पञ्छियों को देख। जोड़ी कैसी अच्छी मिली है। बता, कौन उस तरह मेरी बगल में बैठकर मेरा शौक पूरा करेगी ?" बात यह थी की प्यारीबाई अब बूढी हो गई थी। इसलिए फकीर

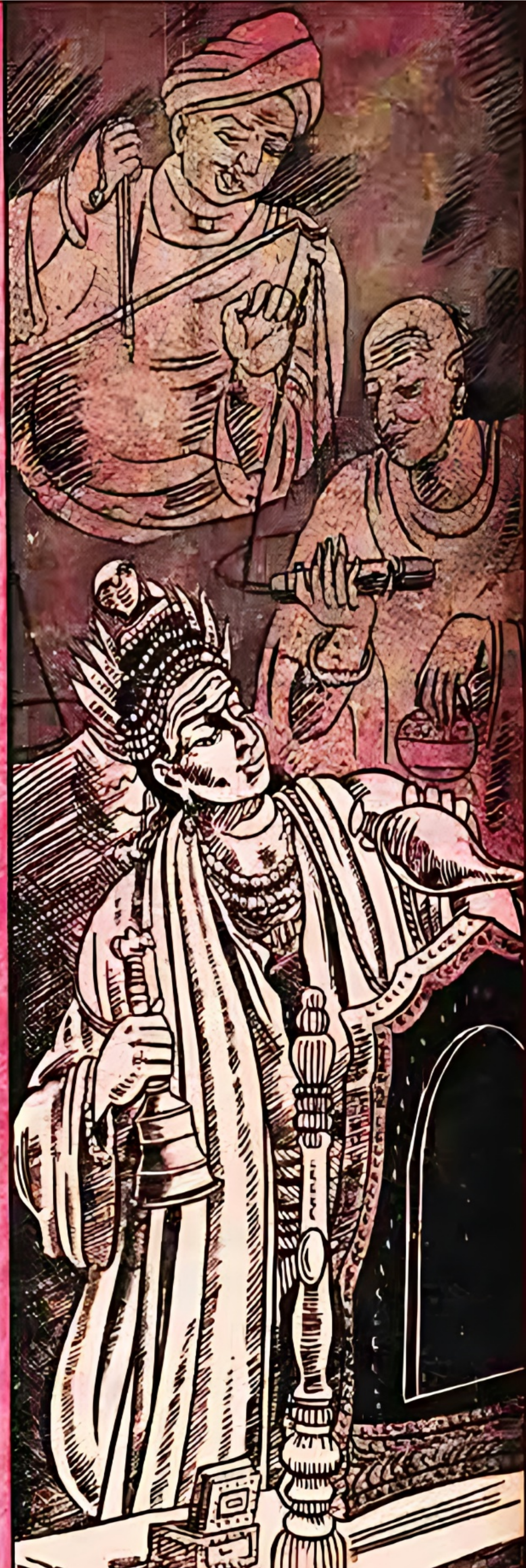
के मन में यह इच्छा पैदा हो गई थी कि वह और एक सुन्दरी युवती को हर लाए। इसलिए उसने काली बिल्ली को मार कर उसके भस्म से आँखों में अञ्जन साघ कर चारों ओर देखा। लेकिन उसे कहीं अपने मन के लायक सुन्दरी न मिली। इतने में उसकी नजर पश्चिम में बारह योजन की दूरी पर श्रीनगर के महलों में नागवती पर पड़ी। उसने तुरन्त निश्चय कर लिया कि इसको हर लाना चाहिए। इसलिए वह उठकर प्यारीबाई के साथ उसके महल में गया।

प्यारीबाई ने फकीर को आसन पर बिठाया ,फिर उसने बारह मन गेहूँ की रोटियाँ और तीन मन मूँग की दाल पकाकर फकीर के सामने रखी। फकीर तीन घड़े घी के साथ वह सब चट कर गया। फिर उसने तीस घड़े शराब पी। लेकिन नशा नहीं चढ़ा। दो सेर अफीम खाई। लेकिन उससे भी कोई लाभ न निकला। तब वह चार बोरे गाँजा एक चिलम में डालकर फूँकने लगा। इसे इतना धुँआ निकला कि कोई देखता तो समझता कहीं गाँव के गाँव जल रहे हैं। अब फकीर पर नशा चढ़ गया। उसकी आँखें



लाल हो गई। उसके मन में नागवती को हर लाने की इच्छा प्रबल हो गई। तब उसने कपड़े बदले और भड़कीली रेशमी पोशाक पहन ली। लेकिन आईने में अपना रूप देखकर उसने समझा कि इस भेष में नागवती को नहीं हर ला सकता। तब उसने कमर में अंगोछा कस कर काँख में पोथियाँ दवाई और एक ब्राह्मण का भेष बनाया। लेकिन इससे भी उसे सन्तोष न हुआ। तब उसने तराजू हाथ में ले एक बनिए का भेष बनाया। लेकिन वह भी अच्छा न लगा। आखिर उसने कमर में सुनहरा पटका कसकर बदन में भभूत रमाई, गले में रुद्राक्ष की माला पहनी और एक शिव-भक्त का भेष बनाया। एक हाथ में शंख और दूसरे में घण्टा लिया। फिर कन्धे में झोली लटका कर उसमें एक सोने की और एक चाँदी की छड़ी डालकर श्रीनगर की ओर रवाना हुआ।

फकीर अपने जादू के बल से पलक झपकते ही श्रीनगर के किले पर जा पहुँचा। लेकिन वहाँ चौकीदार रामजतन ने उसे रोका और अन्दर जाने नहीं दिया। उसने कहा -"अगर तुम भीख चाहते हो, तो मैं ही तुम्हें दे दूँगा। लेकिन किले के अन्दर





नहीं जाने दूँगा।" फकीर ने उसे बहुत समझाया। लेकिन रामजतन न माना।

आखिर फकीर ने गुस्से में आकर कहा "रे मूर्ख ! इसीलिए तू निसन्तान रह गया। अगर मैं चाहता तो तुझे सन्तान दे देता। क्योंकि मैंने ही नागवती को सात दिन पहले एक लड़का दिया था। यह सुनते ही रामजतन के मन में उस कपटी शिव-भक्त के प्रति बड़ी श्रद्धा पैदा हो गई। उसने समझा कि स्वयं शिव जी उस रूप में आए हैं। उसने फकीर के पैरों पड़ कर क्षमा माँगी और विनती की -"आप मुझ पर भी कृपा करके सन्तान दीजिए।" तब फकीर ने अपनी झोली में से थोड़ी भभूत निकाल कर चौकीदार के हाथ में दे दी और कहा -"तुम यह भभूत ले जाकर थोड़ी सी अपनी स्त्री को खिला दो। बाकी अपने घर में सब जगह छिड़क दो।"

चौकीदार दौड़ता दौड़ता घर गया। उसने फकीर के कहे अनुसार किया। बस, अब क्या था ! जिस जिस जगह भभूत पड़ी, वहाँ -वहाँ तुरन्त बच्चे पैदा हो गए। जहाँ देखो वहाँ बच्चे। छत पर बच्चे। दीवारों पर बच्चे। बाड़ी में बच्चे। आखिर कुँए से भी बिलबिलाते बच्चे ऊपर रेंगने लगे। करीब तीन-चार सौ बच्चों रोते चीखते आकर रामजतन और उसकी स्त्री को घेर लिया। सब खाना माँग रहे थे। थोड़ी ही देर में उन्होंने घर में जो कुछ था सब चाट-पौंछ कर साफ कर दिया। फिर भी चिल्ला-चिल्ला कर खाना माँगते ही रहे। चौकीदार रामजतन के नाकों दम हो गया। वह किसी न किसी तरह उनसे पिण्ड छुड़ाकर फकीर के पैरों में जा गिरा। "भाड़ में जाए सन्तान। मुझे इस राक्षसी सन्तान से बचाओ। मैं तुम्हें किले में जाने दूँगा।" उसने फकीर से कहा। फकीर ने फिर थोड़ी सी भभूत निकाल कर उसके हाथ में देकर कहा -"जा ! पहले की तरह इसे भी





फकीर ने बारी बारी से छः बहनों के घर जाकर भीख माँग ली। वह चिल्ला कर कहता जाता था - "भगवान भूतनाथ की कृपा से दूधों-पूतों फूलो-फलो। भगवान की भभूत रमा लो। भूत प्रेत सब भाग जाएँगे। जय शङ्कर । जय शङ्कर। हर हर बम।" यह कहकर वह जोर से शंख बजाता।

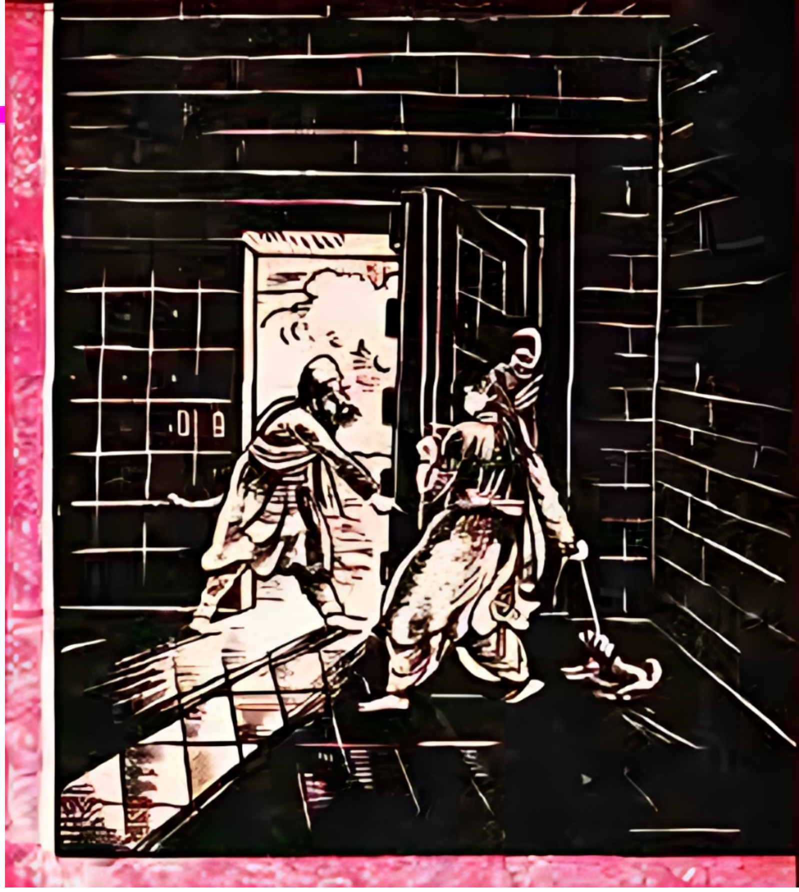
इसी तरह वह सारे किले में घूमता फिरता नागवती की ड्योढ़ी पर पहुँचा।

उसने एक बार जोर से शंख फूँक कर भीख माँगी। जब दासियाँ भीख डालने आई, तो उसने कहा -"मैं दासियों के हाथ से भीख नहीं लेता। जाओ, मालकिन को खुद अपने हाथ से भीख डालने को कहो।" जब दासियों ने कहा कि नागवती अभी बाहर नहीं आ सकती तो उसने कहा -"अच्छा ! तो उसे इतना घमण्ड चढ़ गया है ? क्या वह नहीं जानती कि मैंने उसे जो लड़का दिया है उसे जब चाहूँ तब छीन ले सकता हूँ ?" दासियों ने डर के मारे यह बात नागवती से जाकर कह दी। तब नागवती ने सोचा कि महात्माओं की क्रोध से बच्चे का अनिष्ट हो सकता है। इसलिए वह खुद फकीर को भीख डालने चली। इतने में जब

जगह-जगह छिड़क दे। इस बार तू जितने बच्चे चाहेगा, उतने ही बचे रहेंगे।" रामजतन ने तुरन्त घर जाकर वैसा ही किया। फकीर की कृपा से उसके सात बच्चे रहे। रामजतन की जान में जान आ गई। उसने बिना चूँ-चपड़ के फकीर को किले में प्रवेश करने दिया।

फकीर ने किले में जाकर देखा तो उसे नागवती की छहों बहने खड़े लेकर पनघट पर जाती दिखाई दी। नागवती उनके साथ नहीं थी। फकीर ने अपने जादू के बल से उनके घड़े में अशर्फियाँ भर दी। चकित होकर वे तुरन्त घर लौट गई। लेकिन घर जाने पर उन्हें अशर्फियों के बदले ठीकरे दिखाई दिए।

उसका बच्चा जाग कर रोने लगा तो उसने उसका मन बहलाने के लिए अपनी अंगूठी निकाल कर उसकी नन्ही सी ऊँगली में पहना दी। फिर वह भीख लेकर बाहर आई। लेकिन फकीर ने भीख लेने से इनकार कर दिया। उसने कहा कि जब वह अपने पति की खींची हुई सातों लकीरें लाँघ कर बाहर आएगी, तभी वह भीख लगा। क्योंकि उन लकीरों का प्रभाव कुछ ऐसा था कि नागवती जब तक उनके अन्दर रहती, तब तक फकीर उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता था। नागवती भी उन लकीरों को पार करने में हिचकिचाने लगी। यह देखकर फकीर ने उसे फिर धमकाया कि मैं बच्चों को छीन ले जाऊँगा। आखिर नागवती ने लाचार होकर उसकी बात मान ली। बस, अब क्या था !उसके लकीरों से बाहर आते ही फकीर ने उसे अपनी जादू की छड़ी से छुआ। तुरन्त वह एक कुत्तिया के रूप में बदलकर अपने बच्चों के पालने के चारों ओर करूण स्वर में चिल्लाती हुई घूमने लगी। फकीर ने उसे डरा धमका कर बाहर बुलाया और उसके गले में एक जञ्जीर बाँधकर अपने साथ ले चला।



लेकिन किले के फाटक पर रामजतन ने फिर उसे रोक लिया। उसे इस कुत्तिया को देखकर शक हो गया। उसने कहा -"अन्दर जाते वक्त यह कुत्तिया तुम्हारे साथ नहीं थी। इसलिए मैं इसे तुम्हारे साथ नहीं जाने दे सकता।" फकीर ने उसे बहुत कुछ कहा-सुना। डराया धमकाया भी। लेकिन वह टस से मस न हुआ। तब फकीर को गुस्सा आ गया और उसने थोड़ी सी भभूत निकाल कर चौकीदार के माथे पर छिड़क दी। तुरन्त रामजतन पगला कर जङ्गल की ओर दौड़ा।

थोड़ी ही देर में फकीर अपने किले में पहुँच गया। वहाँ उसने अपनी झोली से

सोने की छड़ी निकाली और उस कुत्तिया को छुआ। तुरन्त चूड़ियाँ खनकाती, पायल छनकाती नागवती उसके सामने खड़ी हो गई। उसे देख फकीर ने उतावली के साथ उसका हाथ पकड़ना चाहा। लेकिन नागवती ने उसे रोक कर कहा -"रे फकीर ! मैंने बारह बरस का व्रत लिया है। इसलिए व्रत पूरा होने तक तुम मुझे नहीं छू सकते। मैं तुम्हारे हाथ से तो किसी तरह निकाल कर नहीं जा सकती। फिर तुम क्यों उतावले होते हो ? याद रखो। अगर तुमने मेरी मर्जी के खिलाफ मुझे छुआ, तो तुम्हारा सर टुकटुक हो जाएगा। खबरदार !"

फकीर बड़ा भारी जादूगर तो था। लेकिन नागवती पतिव्रता थी। इसलिए उसके सामने इसका जादू बिल्कुल नहीं चलता था। वह उसका बाल भी बाँका नहीं कर सकता था। थोड़ी देर बाद फकीर ने नागवती को छड़ी से छूकर उसे मुट्ठी भर राख में बदल डाला। फिर वह उस राख को अपनी झोली में छुपा कर प्यारीबाई के घर गया। प्यारी ने उसे अकेले लौटते देखकर समझा कि वह नागवती को हर नहीं ला सका। इसलिए अपना सा मुँह लेकर लौटा है। उसने उसकी दिल्लगी उड़ाई।

फकीर ने मुस्कुरा कर झोली को अपनी सोने की छड़ी से छुआ । तुरन्त चूड़ियों और नुपूरों की झङ्कार के साथ नागवती उठ खड़ी हुई। उसकी सुन्दरता से महल जगमगा उठा।

"हाय ! बिटिया ! तुम इस हत्यारे के पञ्झे में कैसे फँस गई ? न जाने अब तुम्हारी क्या दशा होगी।" प्यारी ने नागवती को देखकर आँसू बहाते हुए कहा। बिचारी नागवती क्या जवाब देती ! वह भी आँसू बहाने लगी। फकीर ने उसे मस्जिद में ले जाकर कैद कर दिया। नागवती को बार-बार अपने बच्चे की याद सताने लगी। वह अपने भाग्य को बहुत रोई। हाय ! कौन उसके पति को जाकर बताए कि वह मस्जिद में कैद है। [संशेष]



CHANDAMAMA (Hindi) JUNE 1950 Regd. No. M. 5452



बन्दरघुड़की